

(2) गैस्टाल्ट मनोविज्ञान
GESTALT PSYCHOLOGY

B.A-IV

IV

पिछले कक्षा में हमलोगों ने गैस्टाल्ट मनोविज्ञान
द्वारा किये गये योगदानों का चर्चा किया और
भाषा :-

2. सीखना (Learning) :- गैस्टाल्ट मनोविज्ञानियों
ने सीखने के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।
इन्होंने स्पष्ट किया कि सीखना में एक तरह के
क्षेत्र का प्रत्यक्षणात्मक संगठन होता है। सीखने
के बाद क्षेत्र का प्रत्यक्षणात्मक संगठन होता है।
तथा व्यक्ति परिस्थिति को नये ढंग से देखता है।
इन्होंने स्पष्ट किया कि प्राणी यज्ञ (insight) द्वारा
सीखता है। सीखने की परिस्थिति में व्यक्ति के पास
एक समस्या होती है। वह इस समस्या के कई
संभावित समाधान सोचता है तथा कई विकल्पिक
रूप अस्थायी प्राक्कल्पनाएँ तैयार करता है। अचानक
उसमें सही उत्पन्न होता है और सही समाधान का
बोझा है। गैस्टाल्टवादियों ने सूक्ष्म सीखना
के चार व्यवहाराल्मक सूचकांक बताये हैं।
ये चार सूचकांक हैं :-

- (क) किंकर्तव्यविमूढता से अचानक पूर्णता की ओर अंतरण।
- (ख) नियम को समझने के बाद विष्पादन में तेजी से
सहजता।
- (ग) उत्तम व्याख्या।
- (घ) समस्यात्मक परिस्थिति में तत्पश्चात् तत्परा
के साथ समाधान का अंतरण (transfer)।

1913 में कोहलर केनारी द्वीप में इनके

(Tenebrif) में मानवाका स्टेशन (anthropoid station) का निदेशक नियुक्त हुए और प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ जाने के बाद काण्ड उन्हें वहाँ काबू दिनी तक रहना पडा। वहाँ उन्होंने वनमानुष तथा कौनों पा कई अध्ययन किये। कौहलर के सबसे बुद्धिमान वनमानुष का नाम 'सल्लान' था जिसपा कई प्रयोग किये। वर्ष 'समस्या' पा किये गये प्रयोग एक छोटी समस्या पा किये गये प्रयोग तुलनात्मक रूप से अधिक निकटिय हुआ। इन सभी प्रयोगों से सुझावपूर्ण सीखना को दिवाने की कोशिश की गई।

3. चिंतन (Thinking) :— सोरबने के प्रति गैस्टाल्टवादीयों के जो विचारधारणें उसका प्रयोग चिंतन के अध्ययन के क्षेत्र में की- किया गया। वकीरमर ने छोटे-छोटे बच्चों को विभिन्न तरह के उधाभित्रीय समस्या को देका उनके चिंतन का अध्ययन किया और उनके द्वारा किये गये प्रयोगों को एक पुस्तक प्रोडक्टिव थिंकिंग (Productive thinking) में प्रकाशित किया। चिंतन के अध्ययन में गैस्टाल्टवादीयों को उजियर्ग स्कूल से प्रेरणा मिली थी। इसमें एक नया गैस्टाल्टवादी उत्पादि हुई। कुछ अन्य गैस्टाल्टवादी जैसे— डंक (Dunker, 1945), मायर (Maier 1930-31) ने जो-अपने प्रयोग से यह स्पष्ट किया कि चिंतन सुझावपूर्ण होता है तथा इसमें प्रत्यक्षतात्मक क्षेत्र की संरचना में परिवर्तन होता है। वकीरमर ने चिंतन के तीन

प्रकार बताये हैं। —

(a) 'a' प्रकार का चिंतन उत्पादक चिंतन को कहा जाता है, जिसमें व्यक्ति का सम्बन्ध निजिगतक समुदायों से होता है तथा जिसमें समूहन (Grouping), पुनर्संगठन (Re-organization) तथा महत्वपूर्ण विशेषताओं की-रूकें आदि की प्रक्रियाएँ प्रधान होती हैं। इस प्रकार व्यक्ति सामान्य वा सम्बन्ध लक्ष्य से जोड़ने की कोशिश करता है।

(b) 'b' प्रकार के चिंतन अंतरा उत्पादक तथा अनुत्पादक एवं आंशिक होता है। वर्तमान के अनुसार उत्पादक चिंतन में विकेंद्रीकरण तथा पुनर्विकेंद्रीकरण की प्रक्रियाएँ देखने को मिलती हैं। विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति के चिंतन में परिस्थिति के बारे में व्यक्तिगत या आत्मनिष्ठ विचार से अनासक्त विचार की और अंतरण होता पाया गया है।

(c) 'c' प्रकार की चिंतन प्रयास एवं त्रुटि तथा अल्प चिंतन के समान होता है। इस तरह के चिंतन से 'a' प्रकार का चिंतन में कमी आ जाती है।

Next day -

Pal